झारखंड की जनजातियां

जनजाति – ऐसे लोग जो सभ्यता के प्रभाव से वंचति रह कर अपने प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप जीवन यापन करते हुए अपनी जीवन पद्धति , भाषा , संस्कार एवं व्यवसायों को अक्षुण्ण बनाए हुए है , जनजाति या आदिवासी कहते है ।

नोट – जनजाति उन प्राचीनतम जनसमूहों मे से हैं जो भारत के दीर्घकालिन इतिहास के दौरान समय समय मे स्थानांतरित हो कर वर्तमान क्षेत्र तक पहुंचे है ।

निवास – जनजाति सामान्यतः वनाच्छादित , पहाड़ी या उच्चभूमियों पर नदियों के तट पर स्थित गांवो मे एक सिरे मे रहते है । ये अधिक उबड़–खाबड़ भूखंडो मे रहते है । जो कृषि कार्य के लिए बहुत हद तक अनुपयुक्त है ।

- ❖2011 की जनगणना क अनुसार झारखंड में अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसंख्या 86,45,042 है ।
- ➢ राज्य की कुल जनसंख्या का लगभग 1 चौथाई जनसंख्या (26.2 प्रतिशत) अनुसूचित जनजातियां है ।
- ➢ झारखंड के सभी जिलों मे अनु जनजातियां निवास करते है मगर छत्तीसगढ एंव पश्चिम बंगाल के सीमावर्ती क्षेत्रे मे जनजातियों का संकेन्द्रण अधिक है ।

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

❖सर्वाधिक अनु.जनजाति वाले प्रथम 5 जिले

1. रांची , 2. प.सिंहभूम , 3. गुमला , 4. पू.सिंहभूम , 5. दुमका

❖न्यूनतम अनु. जनजाति वाले 5 जिले

1. कोडरमा , 2. चतरा , 3. हजारीबाग , 4. देवघर , 5. पलामू

भारतीय संविधान के अनु. 342 के अंतर्गत क्रमशः 1950,1956,एंव 2003 मे भारत सरकार ने झारखंड की 32 जातियों को अनु. जनजाति घोषित किया गया ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- 32 अनु. जनजातियों मे से 8 को आदिम जनजाति की श्रेणी मे रखा जाता है –

1. असुर , 2. परहिया , 3. बिरहोर , 4. बिरजिया , 5. कोरवा , 6. माल पहाड़िया , 7. सौरिया पहाड़िया , 8. सबर (हिलखड़िया)

- 7 अनुसूचित जनजातियां अपने को सदान (प्राचीन गैर जनजातिय लोग) मानते है ।

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

1. बिरजिया , 2. चीक बड़ाइक , 3. गोड़ाइत , 4. करमाली , 5. लोहरा , 6. महली , 7. किसान

- 5 अनु. जनजातियां खुद को उच्च हिन्दू (राजपूत) मानते है ।

1. बथुड़ी , 2. बेदिया , 3. बिझियां , 4. चेरो , 5. खरवार

- जनजातियो ं की दो आधार पर वर्गीकृत किया गया है ।

1. प्रजातीय समूह के आधार पर

2. आर्थिक क्रियाकलाप के आधार पर

3 भाषई आधार पर

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

1) प्रजातीय समूह के आधार पर

1. प्रोटो ऑस्ट्रोलाइड – संथाल , हो , सौरिया पहाड़िया , परहिया , असूर, बिरहोर , सबर , लोहरा , खड़िया , माल पहाड़िया , भूमिज , कोरा ,कोरवा , मुण्डा

2. ऑस्ट्रेलॉइड/प्री द्रविड़ियन – करमाली

3. द्रविड़ियन – उरांव , खरवार , महली , गोंड , चेरो , चिक बड़ाइक , गोड़इत , बैगा , बिरजिया , बथुड़ी , किसान , बिंझिया व बेदिया ।

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

2. आर्थिक क्रियाकलाप के आधार पर

1. स्थाइ कृषक – संथाल , उरांव , मुण्डा , हो

2. पशुपालन व चराई –खरवार

3. कृषक व उद्योगकर्मी – संथाल एंव हो

4. सामान्य कामगर/दस्तकार – लोहरा , करमाली , महली , असूर , चीक बड़ाइक

5. वन व शिकार पर आश्रित – बिरहोर , सबर , पहाड़िया , बिरजिया व कोरवा

CAREER FOUNDATION

6. झुम खेती – संथाल , मलेर , कोरवा , पहाड़िष्स

7. शिक्षित श्रमिक व व्यापारि – संथाल , मुण्डा , हो , गोंड , भील

- झारखंड मे सर्वाधिक जनसंख्या वाले जनजाति

1. संथाल – 35 प्रतिशत

2. उरांव – 18.14 प्रतिशत

3. मुण्डा – 14.56 प्रतिशत

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

4. हो – 9.23 प्रतिशत

5. खरवार – 3.83 प्रतिशत

- सबर जनजाति को हिल खड़िया के नाम से जानते है ।
- किसान जनजाति का अन्य नाम नगेसिया है ।
- उरांव जनजाति को धांगर भी कहा जाता है ।
- कवर एवं कोल जनजाति को 2003 मे अनु. जनजाति घोषित किया गया ।

(1) संथाल

- भील व गोंड के बाद देश की तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है
- झारखंड की सबसे बड़ी जनजाति – 35 प्रतिशत
- प्रोटो ऑस्ट्रेलॉइड प्रजातीय समूह मे आते है ।
- झारखंड मे सर्वाधिक संकेन्द्रण संथाल परगना क्षेत्र मे है ।
- संथाल हजारीबाग , धनबाद , गिरिडीह , हजारीबाग , रांची , पलामू , लातेहार , सिंहभूम क्षेत्र मे भी बसे है ।
  - इनकी त्वचा का रंग काले से लेकर गहरा भूरा , मोटे , काले व खड़े बल , चौड़ी व चपटी नाक सिर चौड़ा व कद मध्यम से छोटा

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

सामाजिक व्यवस्था

- संथालो मे 12 गोत्र है
- ये गोत्र पितृवंशीय व बहिर्विवाही गोत्र है ।

  1. सोरन , 2. हाँसदा , 3. मूरमू , 4. किस्कु , 5. हेम्ब्रम , 6. मरांडी , 7. तुडु , 8. बास्के , 9. बेश्रा , 10 पौरिया , 11. चौरे , 12 बेदिया ,

- संथालो की चार हडो (वर्ग) मे वर्गीकृत किया गया है

  1. किस्कु हड – राजा
  2. मुरमू हड – पुजारी
  3. सोरेन हड – सिपाही
  4. मरूडी हड – कृषक

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- संथाल जनजाति मे समगोत्रिय विवाह निषिद्ध है ।
- युवागृह – संथाल जनजाति का युवागृह घोटुल कहलाता है ।
- सामान्य तौर पर एक विवाह की प्रथा मगर पुरूषों के दुसरा विवाह करने की छुट है ।
- बाल विवाह की प्रथा नही है ।
- विधवा विवाह एवं परित्यक्ता विवाह सामान्य है ।
- संथालो मे विवाह को बापला कहते है ।

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- वर पक्ष की ओर से वधू पक्ष का दिया जाने वाला वधू मूल्य पोन कहलाता है ।
- स्त्री व पुरूष दोनो ओर से शादियां तोड़ने का समान अधिकार है।
- बिटलाहा – यह सबसे कठोर सजा है जिसमे समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है । अनुचित यौन सम्बंध का दोषी पाए जाने पर यह सजा दी जाती है ।
- संथाल गांव को आतो तथा उसके प्रधान को मांझी कहते है । पंचायते 'मांडी थान ' मे बैठती है ।

धर्म

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- प्रधान देवता – सिंगबोंगा/ठाकुर (विश्व विधाता)
- दुसरा प्रमुख देवता)
- दुसरा प्रमुख देवता –मरांग बुरू
- मुख्य ग्रा देवता – जोहार–एरा(निवास–जाहेर थान)
- संथाल गांव का धार्मिक प्रधान – नायके
- गृह देवता – ओड़का बोंगा
- संथाल जंतर–मंतर , जादु टोना विश्वास रखते है ।

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

नोट :– संथालियो का जनक लुगुबुरू को माना जाता है । इनका सबसे पवित्र तीर्थ स्थल लुगुबुरू घंटाबड़ी धोरोंम गढ है जो बोकारो जिले के ललपनिया मे स्थित है । इसे संथालो का मक्का कहा भी कहा जाता है ।

अर्थव्यवस्था

- संथाल मूल रूप से खेतिहर है जो धीरे–धीरे स्थाई कृषक बन गए है।
- ये मक्का , ज्वार , बाजरा आदि मोटे अनाज के अलावा दाल , कपास व धान की खेती भी करते है ।
- अभाव की स्थिति मे ये लोग कुछ विशेष जंगली पेड़ो जैसे साल , महुआ , बांस , आदि के फुल फल को कच्चा या पका कर खाते है ।
- पशुपालन – मुर्गी , सुअर , भेड़ , गाय , भैंस का पालन
- शिकार – ये शिकार करने एवं मछली पकड़ने के शौकिन होते है ।
- पेय पदार्थ – चावल को सड़ा कर बनने वाला हड़िया के अलावा महुआ के शराब का उपयोग पेय पदार्थ के रूप मे करते है ।
- ये केंन्दु पत्ता से बनने वाले बीड़ी पीने के भी शौकिन है ।

नोट :– संथाल जनजातियों की भाषा संथाली है , जिसकी लिपि ओलचिकी लिपि है । इस लिपि का अविष्कार वर्ष 1941 मे पंडित रघुनाथ मुरमू के द्वारा किया गया था ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

नोट :– 92वें सविधान संशोधन 2003 मे संथाली भाषा को भारतीय संवधिान के 8वीं अनुसूची मे शामिल किया गया ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का